SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

"शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनशीलता का अध्ययन'"

दुर्गावती शाह
शोधार्थिनी
एम.एड
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद

डॉ0 सुशील कुमार
शोध निर्देशक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद

सारांश

प्रत्येक व्यक्ति को मानसिक विकास, वातावरण, वंशानुक्रम, सामाजिक स्थिति, परिवार स्वास्थ्य, विद्यालय, जनसंचार माध्यम, शिक्षक आदि के साथ ही की गयी अन्तः क्रियाओं (Interaction) का परिणाम होता है। फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति में वैयक्तिक विभिन्नताओं (Individual difference) का होना स्वाभाविक है। शोध परिणामों के विवेचन से स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों तथा छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता समान है। सृजनशीलता के तीनों तत्वों प्रवाहता, विविधता और मौलिकता के आधार पर सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 पर दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इस प्रकार कहा जा सकता है सृजनशीलता की प्रवाहता बिने के आधार पर छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 पर सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द–*सृजनातमकता, वंशानुक्रम, मानसिक विकास, सृजनशीलता*

प्रस्तावना– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर आपसी अंर्तसम्बन्धों के माध्यम से नित नई चीजों को सीखकर अपने व्यवहार में सदैव परिवर्तन करके अपनी सृजनात्मक शक्तियों का विकास करता रहता है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है तथा वह मानव व्यवहार के रूप में परिलक्षित होती है और इस व्यवहार परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान देता है उसकी सृजनात्मकता। सृणनात्मकता का विकास शिक्षा के द्वारा होता है। इसलिए सृजनात्मकता तथा शिक्षा का महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

सृजनात्मकता मानव के विकास एवं प्रगति की धुरी है। सृजनात्मकता का गुण सभी व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न मात्रा में पाया जाता है। मरालो (1945) के अनुसार आत्मानुभूति व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है तथा यह सृजनात्मकता व्यक्ति में पायी जाती है।

वर्तमान समय में प्रतियोगितापूर्ण समय में जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता मस्तिष्क की आवश्यकता हैं अतः प्रत्येक देश का यह कर्तव्य है कि वह सृजनात्मकता को प्रश्रव देने की समुचित प्रबन्ध करें। क्योंकि यही बालक और युवा छात्र भविष्य में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज को निर्देशित करने एवं राष्ट्र की सफलता एवं प्रगति के परिवार पर ले जाने में सहायक होंगे।

समस्या कथनः–

प्रस्तुत लघु शोध में बी0ए0 प्रशिक्षणार्थियों (छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं) की सृजनशीलता (प्रवाहता, विविधता एवं मौलिकता) का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शीर्षक है–

''शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनशीलता का अध्ययन''

शोध समस्या में आए शब्दों का परिभाषिकरण–

सृजनशीलता का अर्थ :–

सृजनात्मकता अंग्रेजी भाषा के Creativity का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका अर्थ होता है– मौलिकता। सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्वों का मिश्रण रहता है। उस कार्य को सृजनात्मक कार्य कहते हैं जिसके करने का परिणाम नवीन हो अतः उस प्रक्रिया को सृजनात्मकता कह सकते हैं जो हमको नवीन ढंग से सोचने और विचार करने का प्रेरित करें।

सृजनशीलता के कारण तथा प्रकार :–

सृजनात्मकता की विभिन्न परिभाषाओं के अवलोकन तथा विश्लेषण से स्पष्ट है कि सृजनात्मकता को संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पना मौलिकता खोजपरकता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तृतता, नवीनता आदि के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। सृजनात्मकता के समानर्थी यह भी प्रत्यय वैज्ञानिक अनुसंधानों कला–कृतियों, संगीत, रचना लेखन व काव्य

कला, चित्रकला, भवन निर्माण आदि सृजनात्मक कार्यो में परिकालीत होता है। सृजनात्मकता के चार प्रमुख कारक निम्नवत है :–

1. **प्रवाह (Fluency) :-**

प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या पर अधिकाधिक प्रत्युत्तरों से है। प्रवाह को पुनः चार भागों में बांटा जा सकता है– वैचारिक प्रवाह (Ideational Fluency) अभिव्यक्ति प्रवाह (Empressional Fluency) साहचर्य प्रवाह (Associate Fluency) तथा शब्द प्रवाह (word

Fluency) वैचारिक प्रवाह में विचारों से सतत प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे किसी भी सतत प्रस्फुटन को बताना, किसी वस्तु के अनेक उपयोग बताना, किसी वस्तु को सुधारने के विभिन्न तरीके बताना आदि। अभिव्यक्ति प्रवाह में व्यक्ति की अभिव्यक्ति क्षमता के स्वतंत्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे दिये गये चार शब्द से वाक्य बनाना, दिये गये अपूर्ण वाक्य को पूरा करना। साहचर्य प्रवाह से तात्पर्य दिये गये शब्दों या वस्तुओं में साहचर्य स्थापित करने वाली अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत करने से है। जैसे दिये गये शब्दों के पर्यायवाची या विलोम शब्द लिखना। शब्द प्रवाह का सम्बन्ध शब्दों से होता है। जैसे दिये गये प्रत्यतों (Perfin and Suffin) से शब्द बनाना। किसी व्यक्ति के द्वारा किसी सृजनशीलता परीक्षण के किसी पद (Item) पर प्रवाह को प्रायः उस पद पर दिये प्रस्युत्तरौ। की संख्या से व्यक्त किया जाता है। सम्पूर्ण परीक्षण पर व्यक्ति के प्राप्ताकों को ज्ञात करने लिए सभी पक्षों के प्रवाह अंको का योग कर लिया जाता है।

2. विविधता (Flexibility) :-

विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये प्रत्युत्तरों में वैभिन्नप के होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्प या उत्तर दूसरे से कितने भिन्न है। विविधता की तीन दिशाएं हो सकती है– आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता (Figural Spontaneous Flexibility) तथा शाब्दिक स्वतः स्फूर्त विविधता (Semantic Spontaneous Flexibility) आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता से तात्पर्य किसी वस्तु या आकृति के रूप को किसी अन्य रूप से परिवर्तित करने की विधियों की विविधता से है। शाब्दिक स्वतः स्फूर्त विविधता से वस्तुओं या शब्दों के प्रयोग में विविधता से वस्तुओं या शब्दों के प्रयोग के किसी पद (Item) पर विविधता को प्रायः उस पद पर व्यक्ति के द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रत्युत्तरों (Different Responses) से व्यक्त किया जाता है। सम्पूर्ण परीक्षण पर किसी व्यक्ति के विविधता प्राप्तांक को ज्ञात करने के लिए उसके द्वारा विभिन्न पदों पर प्राप्त विविधता अंको को जोड़ लिया जाता है।

1.5 सृजनशीलता का मापन (Measurement of creativity) :-

अन्य मानसिक प्रक्रियाओं के मापन की अपेक्षा सृजनात्मक चिन्तन का मापन एक जटिल कार्य है, क्योंकि यह योग्यता स्वयं में अनूठी अस्पष्ट, जटिल तथा विस्तृत रूप में वितरित है। चूँकि इसमें कई गुणों या योग्यताओं का समावेश रहता है। अतः किसी एक परीक्षण के द्वारा व्यक्ति सृजनात्मकता को कदाचित नहीं मापा जा सकता है। इस संबंध में टेलर का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि मेरे लिए यह समझ पाना अत्यधिक दुर्लभ है कि मस्तिष्क या जटिल मानसिक प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व केवल एक या कुछ अंकों या आयामों द्वारा हो सकता है। मानसिक एक जटिल अंग है

तथा उसकी समस्त बौद्धिक क्रियाओं को एक अंश या कुछ आयामों के माध्यम से दर्शाने की आशा करना मृगमरीचिका के सदृश है।

अतः **मेकनील** ने सुझाव दिया है कि सृजनात्मक के प्रत्येक (Factor) घटक का एक विशेष परीक्षण द्वारा श्रेष्ठमान रूप में मापा जा सकता है। किसी भी घटक या प्रत्यय के मापन से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि उन्हें व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सके।

सृजनात्मक के मापन के लिए अनेक परीक्षणों का निर्माण व मानकीकरण किया गया है। कुछ परीक्षण निम्नलिखित है।

शोध कार्य के विशिष्ट उद्देश्य :–

किसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है। प्रस्तुत लघु–शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. प्रवाहता (Fluency) के आधार पर छात्राध्यापको एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विविधता (Flexibility) के आधार पर छात्राध्यापका एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

किसी समस्या के समाधान के लिए संभावित विकल्प ही परिकल्पना है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और नही कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान सम्भव है। अतः लघु शोधरू–प्रबन्ध को एक वैज्ञानिक रूप देने तथा समस्या के हल के लिए इस शोध–प्रबन्ध की निम्नलिखित परिकल्पनायें निर्धारित की गयी–

1. प्रवाहता (Fluency) के आधार पर छात्राध्यापको एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विविधता (Flexibility) के आधार पर छात्राध्यापका एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सीमांकन :–

प्रस्तुत शोध की समस्या : **" शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनशीलता का अध्ययन"** करना है। यद्यपि शोध प्रंबध का विस्तृत होना चाहिए लेकिन समयाभाव, एवं साधनों की कमी के कारण शोधकर्ता ने प्रस्तुत समस्या को सीमांकित दिया है।

- समयाभाव, धनाभाव, साधनों के अभाव होने के कारण शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में अमरोहा जिले में स्थित बी0एड0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।
- इन महाविद्यालयों की छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 50 छात्राध्यापकों तथा 50 छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया है।

अध्ययन विधि :–

अनुसंधान की वैज्ञानिक विधियाँ विभिन्न हैं। जिसका वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया गया है। जार्ज मक[1] के अनुसंधान विधियों को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया है प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षणात्मक प्रकार की है–

सर्वेक्षण विधि :–

सर्वेक्षण अंग्रेजी रूपान्तरण दो शब्द ''सर्+वे'' से मिलकर बना है। मूल रूप में से ''सर'' (SUR) या ''सेर'' (SOR) तथा वीयन (VEEIR) या वेयन (VEIOR) से हुई है, पर आधारित है। जबकि सोर (SOR) का अर्थ है ओवर (OVER) तथा वेयर (VEIOR) का अर्थ है टू लुक (To, Took) होता है। इस प्रकार सर्वे का सम्मिलित रूप से मूल अर्थ, ''ऊपर से देखना, अवलोकन करना अथवा अन्वेषण करना होता है।'' ''शब्द कोश'' के अनुसार भी सर्वेक्षण का अर्थ है– सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण, जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र की किसी भी स्थिति अथवा उसक प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है। करलिंगर[2] (1964) के अनुसार अनुसंधान सामाजिक वैज्ञानिक की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्या का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्शो के आधार पर उस आशय से किया जाता है ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों का ज्ञान अवलम्बन हो सके।

जनसंख्या (Population) : अम्बेडकरनगर में स्थित महाविद्यालयों के बी0एड0 प्रशिक्षार्थी (छात्राध्यपक तथा छात्राध्यापिका) को प्रस्तुत शोध कार्य के लिए जनसंख्या लिया गया है।

न्यादर्श (Sample) : न्यादर्श की कुल संख्या 100 लिया गया है। जिसमें 50 छात्राध्यापकों तथा 50 छात्राध्यापिकाओं को चुना गया है।

न्यादर्शन विधि (Sampling Method) : प्रस्तुत शोधकार्य में अप्रसम्भाव्यता विधि के अन्तर्गत उद्देश्यानुसार प्रतिथपन (Purposing Sampling) किया गया है।

[1] मूले, जार्ज जे (1970), द साइन्स ऑफ एजुकेशन रिसर्च, न्यूयार्क : वान ना स्ट्रान्ड रेने ह्वटे कम्पनी 541 पृ0पृ0 डा0 शम्म आर0प0 रिसर्च इन एजुकेश'' 149–150 पृष्ठ

2 फाउण्डेसन्स ऑफ विहेवि ओरल रिसर्च, न्यूयार्क : हाल्टरिन हार्ट एण्ड किस्म इन्क, 74 पृ0 शर्मा, आर0ए0 रिसर्च इन एजूकेशन 1995, पृ0 148

उपकरण (Tool) : डा0 वाकर मेंहदी द्वारा निर्मित एवं मानवीकृत ''सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण'' का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना–1: ***प्रवाहता (Fluency) के आधार पर छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।***

तालिका संख्या 4.1

अमरोहा जनपद के बी.एड. विद्यार्थियों का प्रवाहता (Fluency) के आधार पर सृजनशीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश	सार्थकता
पुरूष	50	47.10	11.20	1.20	98	***
महिला	**50**	**45.90**	**12.20**			

नोट – 0.01 स्तर पर *=2.60, 0.05 स्तर पर ** =1.97 सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 4.1 में अमरोहा जनपद के बी.एड. में अध्ययनरत् पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान, मानव विचलन एवं क्रांतिक अनुपात दर्शाया गया है। तालिका से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पुरूष विद्यार्थियों का मध्यमान 47.10 व मानक विचलन 11.20 प्राप्त हुआ है दोनों समूह पर प्राप्त क्रान्तिक मान 0.512 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रांतिक मान सार्थकता के 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि दोनो समूहों के मध्य सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

परिकल्पना–2: ***विविधता (Falexibility) के आधार पर छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना***

तालिका संख्या 4.2

अमरोहा जनपद के बी.एड. विद्यार्थियों का प्रवाहता (Flexibility) के आधार पर सृजनशीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश	सार्थकता
पुरूष	50	33.5	9.20	0.60	98	***
महिला	50	32.9	**8.45**			

नोट – 0.01 स्तर पर *=2.60, 0.05 स्तर पर ** =1.97 सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 4.2 में अमरोहा जनपद के बी.एड. में अध्ययनरत् पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान, मानव विचलन एवं क्रांतिक अनुपात दर्शाया गया है। तालिका से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पुरूष विद्यार्थियों का मध्यमान 33.5 व मानक विचलन 9. 20 प्राप्त हुआ है महिला विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 32.9 (8.45) प्राप्त हुआ है दोनों समूह पर प्राप्त क्रान्तिक मान 0.6 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रांतिक मान सार्थकता के 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि दोनो समूहों के मध्य विविधता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **कपिल, एच0के** : अनुसंधान विधियाँ, हरिप्रसाद भार्गव 4/230 कचहरी घाट, आगरा –4
2. **राय, पारस नाथ** : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, (2005)
3. **पाण्डेय, वी0वी0** : शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1995
4. **पाठक, पी0ड0** : शिक्षा मनोविज्ञान : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
5. **गुप्ता एस0 पी0** : उच्च शिक्षा मनोविज्ञान : शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005
6. **गुप्ता एस0 पी0** : सांख्यिकीय विधियाँ : शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005
7. **सारस्वत, मालती** : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा : आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद, 2006
8. **सिंह, अरूण कुमार** : शक्षा मनोविज्ञान : भारती भवन, पटना, 2005
9. **पाण्डेय रामशकल** : भारतीय शिक्षा दर्शन : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2004
10. **गैरेट, हेनरी ई0** : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्यानी पब्लिर्शस : लुधियाना, 1993
11. **शर्मा, आर0ए0** : शिक्षा अनुसंधान : इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 1986
12. **Passi, B.K. (1972)** : "Creatvity in Educational" N.P.C. Bhargava Bhawan, Agra 1982
13. **Bhattacharya S.R. (1978)** :Interaction of Personality and creative; B.H.U. Varanasi
14. **Buch, M.B.** :Fourth survey of Research in Education, Vol.-I (1983-83), New Delhi: N.C.E.R.T. 1991

15.**Buch, M.B.** :Fourth survey of Research in Education, Vol.-II (1983-88), New Delhi: N.C.E.R.T. 1991

16.**Singh, Pidar.** :Seientific Creatvity and personality; National Psychological Corporation, Agra, 1981

17.**सिंह, लाभ** : सांख्यिकी के मूल आधार, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन आगरा–4

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/08

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

दुर्गावती शाह और डॉ0 सुशील कुमार

For publication of research paper title

"शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनशीलता का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com